ग्रेटर नोएडा स्थित शारदा विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के साथ दीपावली का त्यौहार मनाने के अवसर पर संबोधन

---

22 अक्टूबर 2019, ग्रेटर नोएडा

युवाओं को ऊर्जा, उल्लास और उत्साह का प्रतीक माना जाता है। मैं जब भी युवाओं के बीच जाता हूं , तो एक नये उमंग और उल्लास से भर जाता हूँ। इसलिए आज आप सब के बीच यहां आकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। इस समारोह में मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद **(ARSP)** का आभारी हूँ।

साथियो, आज हम एक बहुत ही खास अवसर पर यहां मिल रहे हैं। यह खास मौका है- दीपावली महापर्व का। वैसे तो मानव जीवन में सभी पर्व महत्वपूर्ण होते हैं। पर दीपावली का एक विशेष महत्व है, क्योंकि यह प्रकाश का, रोशनी का पर्व है।

मित्रो, मुझे लगता है कि हमारे जीवन में प्रकाश या रोशनी सबसे जरूरी तत्व है। इस जीवन और जगत को, उसकी खूबसूरती को हम प्रकाश के कारण ही देख पाते हैं। इसलिए दीपावली के जरिये हम इस प्रकाश का आदर और सम्मान करते हैं।

साथियो, लेकिन दीपावली का पर्व केवल भौतिक प्रकाश या रोशनी का उत्सव नहीं मनाता है। भौतिक अंधेरा तो डरावना होता ही है। पर काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि जैसी बुरी भावनाओं का अंधेरा तो और भी ज्यादा खतरनाक होता है। और, इन सबका असली कारण है अज्ञान का, अविद्या का अंधकार।

इसीलिए हमारी संस्कृति में ज्ञान एवं विद्या के प्रकाश को सबसे ज्यादा महत्व दिया गया है। विद्या के प्रकाश के सहारे ही हम बुराइयों से बचे रहते हैं। और, स्वयं को ऊपर उठाकर देवतुल्य बन सकते हैं। इसलिए हमारे उपनिषदों में ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि- हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। तो, दीपावली का यह पर्व बुरी प्रवृत्तियों और अज्ञान के तथा अविद्या के अंधेरे से निकलकर ज्ञान और विद्या के प्रकाश की ओर बढ़ने के संकल्प का भी पर्व है।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि शारदा विश्वविद्यालय इस संदर्भ में उल्लेखनीय काम कर रही है और विद्या एवं ज्ञान के प्रकाश को फैला रही है।

साथियो, भारतीय संस्कृति पूरे विश्व को एक परिवार मानती है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' अर्थात , पूरा विश्व ही एक परिवार है, की धारणा के आधार पर हम सदियों से अन्य देशों के साथ प्यार, भाईचारे और अपनेपन का सम्बन्ध बनाते रहे हैं। और, ज्ञान-विज्ञान का आदान-प्रदान करते रहे हैं।

भारत की इसी प्राचीन मान्यता का अनुसरण करते हुए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद लगभग पचास वर्षों से विदेशी छात्र-छात्राओं को हमारे सांस्कृतिक परिवेश में शामिल करने के लिए निरन्तर प्रयास कर रहा है।

साथियो, आप सभी जानते हैं कि भारत और यहां की अद्भुत संस्कृति को समझने के लिए प्राचीन काल से ही विदेशी छात्र एवं यात्री यहां आते रहे हैं। मौर्यकाल में मेगास्थनीज आये। बाद में, चीनी यात्री फाहियान आये। फिर, हर्षवर्धन के समय में हुएनसांग आये। तेरहवीं शताब्दी में अफ्रीकी यात्री इब्नबतुता और बहुत से लोग आये।

ये सभी यात्री यहां की सभ्यता और संस्कृति से और ज्ञान-विज्ञान से सम्मोहित हुए बिना नहीं रह पाए। '**अतिथि देवो भव**:' के मूल्यों पर चलने वाली हमारी मातृभूमि ने हमेशा ही अतिथियों का हृदय से स्वागत किया है। आज यहां मौजूद सभी विदेशी विद्यार्थियों का भी उसी भाव से हार्दिक स्वागत है।

मुझे खुशी है कि अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद **(ARSP)** ने इस परम्परा को आगे बढाया है। परस्पर मेल भाव बढाते हुए गत वर्षों में, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद ने कई पहलें की हैं और उन्हें जारी भी रखा है। प्रवासी भारतीयों के साथ बातचीत और संपर्क को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रमों का आयोजन किया है।

इनमें कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम शामिल हैं, जैसे कि- **PIO-**सांसद सम्मेलन, **'** *नो योर रूट्स* **(Know Your Roots)'** कार्यक्रम, प्रवासी भारतीय युवाओं के साथ संपर्क, उनसे जुड़े व्यापक विषयों पर अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय सम्मेलन और संगोष्ठियां शामिल हैं।

साथियो, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद प्रवासी भारतीयों से जुड़े मुद्दों के बारे में उनके विचारों और उनके सरोकारों को हमारी सरकार तक पहुंचाने के लिए संपर्क सूत्र के रूप में भी काम कर रहा है। यह बहुत उल्लेखनीय है।

जैसा कि हम सब जानते हैं, छात्र-छात्राएं विश्व समुदाय का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यहां आकर उन्हें अपना ज्ञान बढ़ाने और अनेक संस्कृतियों के बीच रहकर शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। इससे वे अपने चुने हुए देश की भाषा और संस्कृति को गहराई से जान पाते हैं। विदेशी विद्यार्थियों के पास हमारे देश में स्थानीय सदस्य की तरह रहने और उनके व अपने बीच के सांस्कृतिक अंतर को समझने और उससे सीखने का एक अवसर होता है।

मित्रो, हमारा देश सांस्कृतिक रूप से एक समृद्ध देश है। हमारे यहां अनेक प्रकार के खान-पान, परम्पराएँ, मान्यताएँ, सामाजिक रीति-रिवाज, वेशभूषा, भाषा, त्यौहार ,आदि मौजूद हैं।

हमारे यहां हिंदू, जैन, इस्लाम, सिख, ईसाई, बौद्ध और पारसी धर्म जैसे विश्व के सभी प्रमुख धर्मों के अनुयायी भी रहते हैं। लेकिन इन विविधताओं के बावजूद भारत के नागरिक एक-दूसरे की मान्यताओं और आचार-विचार का सम्मान करते हुए प्रेम, सद्भाव और शांति से रहते हैं।

मैं कहना चाहता हूं कि हम अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से भली-भांति परिचित हैं और संस्कृतियों, धर्मों और मान्यताओं के इस अनूठे सामंजस्य को बनाए रखने का हर संभव प्रयास करते हैं।

मुझे यह कहते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि विश्व भर में हमारा देश सहिष्णु देश के रूप में प्रसिद्ध है। हम शांति और अहिंसा के पक्षधर हैं। हथियारों और गोला-बारूद के उपयोग को हम कभी भी बढ़ावा नहीं देते हैं।

हमें उम्मीद है कि आप अपने यहां के प्रवास के दौरान भारत के मूल स्वभाव को समझेंगे। हमारी संस्कृति प्रेम, विश्वास, शांति और सद्भाव पर केन्द्रित है। भारत हमेशा से ही **'**सर्वे भवन्तु सुखिन:**'** का हिमायती रहा है। हमारा यह विश्वास रहा है कि शांतिपूर्ण विश्व में ही संस्कृति और मानवता का विकास हो सकता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि जब आप यहां से वापस जाएंगे तो, आप दुनिया भर में हिंसा, आपसी झडप जैसे अवगुणों को मिटाकर सर्वत्र प्रेम, सौहार्द, शांति और सद्भाव का संदेश फैलाने वाले भारत के 'गुडविल एंबेसडर' बनेंगे।

भारतीय संस्कृति के जिन मूल तत्वों को आप ग्रहण कर पाएंगे, उससे भविष्य में आपके विश्व नागरिक बनने का स्वप्न निश्चय ही पूर्ण होगा।

यह गर्व की बात है कि शारदा विश्वविद्यालय-ग्रेटर नोएडा में पूरे उत्तरी भारत में सबसे अधिक विदेशी छात्र **(2000** से ऊपर**)** हैं। यह हमारी शिक्षा प्रणाली और इसकी व्यावहारिक सोच में विदेशी छात्रों के विश्वास को दर्शाता है। यहां हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि प्राचीन समय में 'नालंदा' और 'तक्षशिला' के शिक्षा केंद्र विश्व प्रसिद्ध शिक्षण संस्थानों में शामिल थे।

मैं यहां उपस्थित सभी विदेशी छात्रों और उनके देशों के मिशन प्रमुखों को बताना चाहूंगा कि 'दीपावली' को 'दीपों का त्यौहार' कहा जाता है। इस पर्व को दिये जलाकर धूमधाम से मनाने का रिवाज है।

ऐसा माना जाता है कि आज ही के दिन बुराई के प्रतीक लंका नरेश रावण को पराजित कर भगवान श्रीराम अयोध्या पहुँचे थे। तब अयोध्या की प्रजा ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया था।

मित्रो, दीपावली के दिन सभी लोग अपने-अपने घरों को सुंदर ढंग से सजाते हैं और रंगोली भी बनाते हैं। इस मौके पर मित्र और संबंधी आपस में मिठाइयों और उपहारों का आदान-प्रदान करते हैं। इस दिन जरूरतमंदों को भोजन और उपहार देने का भी रिवाज है।

साथियो, हमारे देश में ये त्यौहार न केवल जीवन की नीरसता में सरसता घोलते हैं, बल्कि देश की जीवंत और ऊर्जावान संस्कृति को भी दर्शाते हैं। इन त्यौहारों को मिल जुलकर मनाने से लोगों में खुशी का संचार होता है और उनके आपसी संबंध और मजबूत होते हैं।

भारत का हर त्योहार परस्पर प्रेम और विश्वास का संदेश देता है। हर पर्व के पीछे सबके कल्याण की कामना होती है। और, ये भारतीय संस्कृति की मानवतावादी सोच को ही दर्शाते हैं। हमारी इस सोच ने सदियों से विश्व को हमारे देश के प्रति आकर्षित किया है।

दीवाली की अंधेरी रात में छोटे-छोटे दीपों की जगमगाहट हम सबके मन, मस्तिष्क और आत्मा को प्रकाशित करती है। जलते हुए दीपक हमें प्रेरित करते हैं कि हम अंधेरे से डरें नहीं। हम निराश न हों।

लेकिन, दीपावली के मौके पर दीये जलाना एक नई शुरुआत, एक नए संकल्प का भी प्रतीक है। इसलिए, आइये, हम सब इस दीपावली पर दिए जलाते हुए यह संकल्प लें कि हम अपने को बेहतर मनुष्य बनायेंगे। हम हमेशा शुभ कर्म करेंगे तथा सही व सकारात्मक दिशा में सोचेंगे।

मैं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद् को इस आयोजन के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। आपने इस गरिमामयी आयोजन के जरिये सभी संबंधित लोगों को शामिल किया और आपस में मिलने-जुलने का एक मंच प्रदान किया है। मेरा विश्वास है कि इसके दूरगामी और प्रेरणास्पद परिणाम होंगे।

मैं आशा करता हूँ कि शारदा यूनिवर्सिटी इसी तरह से भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के पावन कार्य को करती रहेगी। इसके साथ-साथ, अंतरराष्ट्रीय छात्र समुदाय के बीच आपसी सद्भाव बढ़ाने के सामूहिक प्रयासों को भी निरन्तर जारी रखेगी।

इस कार्यक्रम से जुड़े सभी लोगों को मैं पुन: हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। और, इस शुभ अवसर पर यहां उपस्थित सभी लोगों को दीपावली के इस त्यौहार की बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

.....